

शेख फ़रीद - सबद १३
देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥
सलोक, शेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥
अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि ॥९॥

सार: सच्चा ज्ञान जीवन के अनुभवों से सीखने पर निर्भर करता है। अनुभव से सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है, जिसमें ज्ञान के सिद्धांतों को व्यावहारिक उपयोग के साथ जोड़ा जाता है। यह सीख को अमल में लाकर हमारे फैसलों पर असर डालता है और हमें विकास के नए अवसर प्रदान करता है।

देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥
फरीद का कहना है कि निरंतर चिंतन में मग्न होकर विवेक प्राप्त करने की वजह से दाढ़ी सफ़ेद हो गई है।

अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि ॥९॥
भविष्य आपकी पहुंच में है क्योंकि अतीत बहुत दूर फिसलता जाता है, जो अज्ञानता से ज्ञानोदय की सक्रिय खोज की ओर बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। (९)

तत्त्व: शेख फ़रीद अतीत को पीछे छोड़ने और आत्म-खोज की परिवर्तनकारी यात्रा में आगे बढ़ने की कला को अपनाने के महत्व पर ज़ोर देते हैं। वर्तमान को संजोकर और कल के बोझ से मुक्त होकर हम अज्ञानता से आत्मज्ञान की खोज की ओर बदलाव का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com